AIJ 2/12/10

कम लागत व बेहतर डिजाइन के बनेंगे एयर क्राप्ट

• सिम्युलेटिड ईवैल्युवेशन एण्ड लर्निंग विषय पर कांफ्रेंस शुरू



नेशनल कान्फ्रेंस का दीप जलाकर उदघाटन करते प्रो. एस.जी. धांडे।



प्रो. कल्यानमय देव

• औद्योगिक संसाधनों को और सुगम व बेहतर बनाने पर मंथन

कानपुर, 1 दिसम्बर। सिम्युलेटिड ईवैल्युएशन एण्ड लर्निंग विषय पर आज यहां के आउटरीच सभागार में शुरू हुयी चार दिनी नेशनल कांफ्रेंस में डिजाइन इंजीनियरिंग विभाग के चोटी के जानकारो नें मंथन शुरू कर दिया है। यह पूरे विश्व में हो रहे इस विषय के कांफ्रेंस की आठवीं कड़ी हैं जबकि इससे पहले कई देशों में ७ कांफ्रेंस हो चुकी है। आज पहले रोज उद्घाटन सत्र के बाद हुये पैनल डिस्कशन में उद्योग जगत से जुड़े पांच प्रमुख लोगो ने भी अपनी राय रखी, जबकि दो वैज्ञानिकों ने इस राय को विज्ञान से जोड़कर अपना मन्तब्य पेश किया।

उद्घाटन सत्र को सिविल इंजीनियरिंग विभाग ज्ञाता व आई आई टी कानपुर के डिप्टी डायरेक्टर रहे महेश प्रसाद कपूर ने भी संबोधित किया, जबकि निदेशक संजय गोविन्द धाण्डे ने यहां इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा के लिये जुटे यू के, फ्रांस, नीदरलैण्ड, इटली, पोलैण्ड, सिंगापुर, चीन, जापान, अमरीका के वैत्रानिकों का स्वागत किया। क्रांफ्रेंस के मुख्य संयोजक आई आई टी कानपुर के मैकेनिकल विभाग के प्रो. कल्यानमय देव ने बताया कि उद्योग जगत की काम्प्लीकेटिड फ्लूड मैकेनिक्स रिलेटिड प्राब्लम हल करने की कोशिस की जा रही है। वैसे कम्प्यूटर में एयर क्राप्ट की एक डिजाइन तैयार करने में करीब तीन माह का समय लगता है, इसे रिड्यूज करने का क्या तरीका हो सकता हैं, इसकी लागत कैसे कम की जा सकती है इस प्रयास में जुटे वैज्ञानिक इस पद्धति को अपना रहे हैं। फिलहाल वैज्ञानिक क्वांटम कम्प्यूटर की सोच पर भी काम कर रहे हैं। यह कम्प्यूटर अगर तैयार हो गया यह मालीक्यूल लेबिल का होगा। प्रो. महेश प्रसाद कपूर ने कहा कि आई आई टी कानपुर में सिम्युलेटिड इवैल्युएशन विषय पर अरसे से काम हो रहा है। उन्होनें अपने समय में हुये कामों की भी विस्तार से जानकारी दी। वैज्ञानिकों ने बताया कि भारत में सबसे ज्यादा काम आई आई टी कानपुर में ही हुआ है। चार दिन तक चलने वाली इस महत्वपूर्ण कांफ्रेंस में वैज्ञानिक अपनी राय रखेंगे।

सब डाक्टर, इंजीनियर ही बनेंगे तो प्लंबर कहां मिलेंगे



(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 1 दिसम्बर। आई आई टी कानपुर के डिप्टी डायरेक्टर रहे प्रो. महेश प्रसाद कपूर यहां हो रही आत्महत्याओं की घटनाओं से दुखी है। वे कहते हैं पहले भी यहां आत्महत्यायें होती रही हैं, यह अलग बात हैं कि अब मामले मीडिया में ज्यादा आ रहे हैं। बढ़ती आत्महत्या की घटनाओं के लिये उन्होनें कहा कि समाज की उम्मीदें ज्यादा बढ़ गयी हैं. कोई भी इंजीनियर या डाक्टर से कम नही बनना चाहता। इंजीनियरिंग व मेडिकल की शिक्षा को डी ग्लैमिराइज किया जाना चाहिए। प्लम्बर या फिर इलेक्ट्रीशियन की पढाई करने वालों को भी सम्मान मिले। समाज में ऐसी ही प्रतिष्ठा उन छात्रों को मिले जो अन्य व्यवसायिक कोर्स के साथ नौकरियां पाते हैं तो शायद हालात बदलें। उन्होनें कहा कि सड़क पर इंजीनियर तो मिलेगे पर प्लंबर नही। ग्रेडिंग सिस्टम को उन्होनें उचित बताया।

हड्डी टूटी तो खाली स्थान भरने के लिये नई तकनीक



कानपुर, 1 दिसम्बर। आई आई टी मद्रास के असिस्टेंट प्रोफेसर सरवन कुमार का कहना है कि डिजाइन इंजीनियरिंग के जरिये बायोमेडिकल डिवाइस डिजाइन तैयार करनें के लिये वे शोध कर रहे हैं, अगर यह शोध सफल रहा तो हड्डी में फ्रैक्चर या फिर बोन कैंसर से खाली हुये स्थान की भरपाई इस सिस्टम से की जा सकेगी। उन्होनें बताया कि एक्सीडेंटल मामलों में यह विधि काफी कारगर साबित होगी। इस तकनीकि के जरिये जिस खाली जगह को भरना है उसका डिजाइन मशीन (टीएनटी) में दे देंगे फिर एक ऐसा मैटेरियल तैयार किया जायेगा जो खाली स्थान पर भर दिया जायेगा और यह मैटेरियल खुद बोन (हड्डी) के साथ मिल जायेगा। पहला प्रयोग बकरी के साथ किये जाने का प्लान है। इसी तरह आटोमोटिव के क्षेत्र में भी काम किया जा रहा है टायर की ध्वनि कम करने व इसकी लाइफ बढ़ाने की दिशा में भी शोध किये जा चुके हैं।

Compact 2/12/10

मैटेरियल से भरेगा हड्डी का गैप

कानपुर। खोपड़ी टूटने और फीमर बोन टूटने से परेशान रहने वालों के लिए राहत भरी खबर है। आईआईटी मद्रास के असिस्टेंट प्रोफेसर श्रवण कुमार ने ऐसा मैटेरियल बना लिया है। जिससे हड्डी का गैप भरा जा सकेगा। उनका कहना है कि जिस आकार का हड्डी का गैप होगा। उसी आकार का मैटेरियल बनाया जाएगा। यह मैटेरियल टीएनशी मशीन और आरपी मशीन से बनाई जाएगी। बाद में मशीन की मदद से मैटेरियल हड्डी के गैप में डाल दिया जाएगा। यह मैटेरियल हड्डी के साथ मिक्सअप हो जाएगी। बोन टिश्यू को लेकर बायो मेडिकल डिवाइस भी बनाई जा रही है। दूसरी तरफ आर्टिफिशियल लर्निंग मशीन अब प्रोडक्ट का डिजाइन बनाएगी। इंटेलीजेंट मशीनें किसी भी वस्तु के उत्पादन में सक्षम हैं। इससे प्रोडक्ट की

आर्टिफिशियल लर्निंग मशीनें बनाएंगी प्रोडक्ट

गुणवत्ता बढ़ेगी। लंबाई, चौड़ाई और वजन सटीक रहेगा। अभी तक मैनुअल डिजाइन की जा रही है। इससे आकार या फिर वजन का गणित सटीक नहीं बैठक पाता है। इन्हीं समस्याओं का हल ही आईआईटियन ने खोज निकाला है। जिसमें मैटेरियल डालकर छोड़ दें तो डिजाइन अपने आप बनकर निकल आएगी। संबंधित वस्तु का उत्पादन भी होगा। कंप्यूटर, मशीन और डेटा का आंकड़ा एक साथ जोड़ा जा चुका है।

आईआईटी की चार दिवसीय कार्यशाला बुधवार से प्रारंभ हुई। सेमुलेटेड इवैल्यूएशन एंड लर्निंग विषयक कार्यशाला का उद्घाटन निदेशक प्रोफेसर संजय गोविंद धांडे ने किया। बाद में प्रोफेसर कल्याणमय देव ने बताया कि ऐसी मशीनें बनाई जा रही हैं। जो प्रोग्रामिंग से काम करेंगी। बेहतरीन डिजाइन, उत्पाद बनाएंगी। अभी तक बनाई गई मशीनें ज्यादा महंगी हैं। इन्हें कम दाम पर मुहैया कराने का प्रयास चल रहा है। अभी तक ज्यादातर काम मैनुअल चल रहा है। नई तकनीकी की मशीनों के आने से किसी भी प्रोडक्ट की गुणवत्ता बढ़ाने में आसानी होगी। प्रोफेसर नरेन्द्र करमाकर, प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल और जापान से आए प्रोफेसर ओसियो फुकेडा की मौजूदगी में पैनल डिस्कसन हुआ। अप्लाइड इंडस्ट्री को लेकर चर्चा की गई। कहा गया कि औद्योगिक इकाईयों से संपर्क स्थापित करके नई तकनीकी की जानकारी दी जाए। ताकि उद्यमी पहले से तैयार रहें।